ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

जोधपुर ग्रामीण विकास का कृषि प्रारूप कृषि–तंत्र : एक सामान्य अध्ययन

पवन चौधरी, शोधार्थी, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. अनिता, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

राजस्थान का जोधपुर जिला भौगोलिक दृष्टि से शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्र में स्थित है, जहाँ ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार कृषि तंत्र है। सीमित जल संसाधन, अनिश्चित वर्षा, परंपरागत खेती और बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश ने यहाँ की कृषि संरचना को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान कृषि प्रारूप, कृषि तंत्र की संरचना तथा ग्रामीण विकास में उसकी भूमिका का सामान्य अध्ययन करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार पारंपरिक एवं आधुनिक कृषि पद्धतियाँ ग्रामीण जीवन को प्रभावित कर रही हैं तथा विकास की संभावनाओं और चुनौतियों को जन्म दे रही हैं।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण विकास का आधार मुख्यतः कृषि पर निर्भर करता है। राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित जोधपुर जिला अपनी भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु और सामाजिक संरचना के कारण विशेष पहचान रखता है। यहाँ की कृषि वर्षा पर आधारित है, जिससे उत्पादन में अनिश्चितता बनी रहती है। इसके बावजूद कृषि न केवल आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि ग्रामीण समाज की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना को भी प्रभावित करती है।

साहित्य समीक्षा

ग्रामीण विकास और कृषि तंत्र पर विभिन्न विद्वानों द्वारा अध्ययन किए गए हैं। एम.एस. स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि की संरचना और उसकी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। डी.एन. धानागरे तथा बी.एन. गाडगिल ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका को स्पष्ट किया है। राजस्थान के संदर्भ में किए गए अध्ययनों में यह उल्लेख मिलता है कि शुष्क क्षेत्रों में कृषि विकास के लिए जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और तकनीकी नवाचार आवश्यक हैं।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमें सरकारी रिपोर्टें, जनगणना आँकड़े, कृषि विभाग की प्रकाशन सामग्री, शोध–पत्र एवं पुस्तकें शामिल हैं।

साथ ही, जोधपुर जिले की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का तुलनात्मक विश्लेषण कर कृषि तंत्र के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है।

अनुसंधान अंतराल

अब तक किए गए अधिकांश अध्ययन राजस्थान या शुष्क क्षेत्रों की कृषि समस्याओं पर केंद्रित रहे हैं, परंतु जोधपुर जिले के ग्रामीण विकास के संदर्भ में कृषि प्रारूप और कृषि तंत्र का समग्र एवं विशिष्ट अध्ययन कम उपलब्ध है। विशेष रूप से कृषि तंत्र के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों और ग्रामीण विकास से उसके अंतर्संबंधों पर पर्याप्त शोध की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक होगा। इससे नीति–निर्माताओं, शोधार्थियों और विद्यार्थियों को कृषि विकास की दिशा में प्रभावी योजनाएँ बनाने में मदद मिलेगी।

साथ ही, यह शोध शुष्क क्षेत्रों में सतत ग्रामीण विकास के लिए कृषि तंत्र की भूमिका को स्पष्ट करता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जोधपुर जिले में ग्रामीण विकास का आधार कृषि तंत्र ही है, किंतु प्राकृतिक सीमाएँ और संसाधनों की कमी इसके विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। यदि जल संरक्षण, आधुनिक कृषि तकनीकों, फसल विविधीकरण और सरकारी योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन किया जाए, तो ग्रामीण विकास को सशक्त बनाया जा सकता है।

इस प्रकार, कृषि तंत्र का सुदृढ़ीकरण ही जोधपुर के ग्रामीण विकास की कुंजी है।

संदर्भ सूची

- स्वामीनाथन, एम.एस. – भारतीय कृषि रू समस्याएँ और संभावनाएँ
- धानागरे, डी.एन. – ग्रामीण समाजशास्त्र
- गाडगिल, बी.एन. – भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था
- राजस्थान सरकार – कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट
- जनगणना भारत – जोधपुर जिला जनगणना विवरण
- सिंह, रामकुमार – ग्रामीण विकास और कृषि

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY